

यहूँ हम से ज़तना हसद सलाम और 'आमीन' कहने पर करते हे
ईतना हसद किसी और चीज़ पर नहीं करते. (हदीथ)

आमीन की ४० हदीथें

लेखक : बदीउद्दीन राशदी

ईस्लामिक ईन्फ़ॉर्मेशन सेन्टर

होटल नुरानी पास, डांसा बज़र, लुज़ - क़त्त.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

आमीन

तमहीद

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन. परसलातु परसलामु अला सव्यदिल मुरसलीन, व अला आलिही व अस्थाभिही अजमअीन. अम्मा जअद.

नमाज में आमीन जुलुंअ आपाज से कहने के बारे में बहुत जयादा अहादीथ पारिद हैं, यहां तक कि एमाम मुस्लिमने (किताबत तमीज) में एसको मुतपातिर सुन्नत कहा है. एसी तरह एमाम शपकानीने तइसीर (इतहुल कटीर) सइ नंबर १५ ७८६-१ में हे, एसको मुतपातिर कहा हे.

लेकिन ऐसे यकीनी मसअले के मुतअल्लिक ली मुसलमान एफ्तिलाइ करते हैं यहां तक कि बहुत सारों को आमीन कहने से आर महसूस होती हे और कुछ तो आमीन बिल जहर से रोकते हैं बल्कि आमीन बिल जहर कहनेपालों से नइरत करते हैं. एस हालत को देखकर एस मुफ्तसर रिसाले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमकी आमीन के बारे में यालीस अहादीथ का तरजुमा लीजा जा रहा है.

ताकि अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत नसीज करे ओर नजवी तरीके पर अमल पैरा होने की तपइकी अता इरमाअे. बारगाहे एलाही में अर्र है कि एसे शरइ कुबूलियत बज्शे ओर हिदायत का जर्रीआ बनाअे. आमीन

हदीथ नंबर : १ अमीइल मुअमिनीन हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु से रिपायत हे कहते हैं कि मेने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे सुना कि आपने जब “वलज जाल्लीन” कहा तो “आमीन” कही.

(हवाला : एब्नेमाजा, सइ-५२)

हदीथ नंबर : २ हजरत अबू हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिपायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि जब एमाम “आमीन” कहे तो तुम ली “आमीन” कहे एस लिअे की जसकी “आमीन” इरिशतों की “आमीन” के मुपाइक हो गइ उसके गुजिशता गुनाह

कसम ! में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुशाबेह नमाज पण्हता हुं. (हवाला : नसई १४४, एब्ने हिब्बान, मुस्तदरक हाकिम जल्ल-१, सझा-२२, एब्ने जाइद, सझा-८८, जयहकी सझा-५८, जल्ल-२, दारेकुतनी जल्ल-१, सझा-११५, तहावी जल्ल-१, सझा ११७)

हदीथ नंबर : ५ वाईल भिन हजर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कहते हैं कि में ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से सुना आपने 'वलज्जाल्लीन' पण्हकर जुलंए आवाज से 'आमीन' कही.

(हवाला : तिरमिज़ी जल्ल १, सझा - ५४, दारे कुतनी जल्ल १, सझा १२७)

हदीथ नंबर : ७ अबू हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि जस पकत एमाम 'वलज्जाल्लीन' कहे तो तुम 'आमीन' कहे एंस लिअे कि जसका 'आमीन' कहना इरिशतों के आमीन कहने से मिल गया तो उसके गुजिशता गुनाह बज्शे जाअेगे. (हवाला : जुजारी जल्ल १, सझा-१०८, नसई जल्ल १, सझा-१४७, दारमी सझा १४७, मुस्नए अहमए जल्ल २, सझा २७०)

पजाहत : एंस रिवायत में ली (इल्लू 'आमीन') 'कहे आमीन' हे ओर मुतलक भिला कैए हे एंस लिअे जहर मुराए होगा जैसाकि एपर गुजरा एंस रिवायत पर एमाम जुजारी रहमहुल्लाह ने यह बाब कायम किया हे "मुकतदी के जुलंए आवाज से 'आमीन' कहेना का बाब" एंस हदीथ ओर हदीथ नंबर-२ से मअलूम हुवा कि इरिशते 'आमीन' कहते हैं ओर युंकि उनके दूर होने की वजह से उनकी 'आमीन' सुनने में नहीं आती ओर वह एमाम की 'आमीन' के पीछे 'आमीन' कहते हैं लिहाजा हमें ली एमाम की 'आमीन' के पीछे 'आमीन' कहने का हुकम हे ताकि हमारी 'आमीन' उन (इरिशतों) की 'आमीन' से मिले ओर हमारे गुनाह मुआइ किअे जाअे.

हदीथ नंबर : ८ अबू मूसा अशअरी रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने जुत्बा देते हुअे हमें हमारा तरीका समजाया ओर नमाज सिजाई इर इरमाया जस पकत नमाज पण्हो सई सीधी करो ओर तुम में से कोई अेक एमामत कराअे इर जस पकत एमाम तकबीर कहे तुम ली तकबीर कहे ओर जब 'वलज्जाल्लीन' कहे तो तुम

‘आमीन’ कहो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा. (हवाला : मुस्लिम ज़ल्द १, सज़ा-१४७, अबू अपाना ज़ल्द १, सज़ा १२ॢ)

पज़ाहत : ँस रिपायत में ली (कूलू ‘आमीन’) ‘कहो आमीन’ मुतलक हे ँस लिअे जुलंड आपाज़ मुराद होगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमका जुल्बे में ‘आमीन’ का हुकम देना ँसका मुअक्कद होना और उसकी शान प अज़मत ज़ाहिर करता हे नीज़ मअलूम हुपा कि ‘आमीन’ कहने से अल्लाह तबारक प तआला की मुहब्बत प नज़दीकी हासिल होती हे. सुब्हानल्लाह कितनी शान हे ‘आमीन’ की...

हदीष नंबर : ॢ अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिपायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लम जब सूरह ज़ातिहा से ज़ारिग होते थे तब जुलंड आपाज़ से आमीन कहते थे. (हवाला : मुस्तदरक हाकिम ज़ल्द १, सज़ा-२२३, दारकुतनी, जयहकी ज़ल्द १, सज़ा-११०, ँब्ने हिब्बान)

हदीष नंबर : १० उम्मुल मुअमिनीन आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिपायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमने इरमाया कि यहूद हम से ज़तना हसद सलाम और ‘आमीन’ कहने पर करते हे ँतना हसद किसी और चीज़ पर नहीं करते.

(हवाला : ँब्नेमाज़ सज़ा ॢ२, सहीह ँब्ने जुज़यमा, मुस्नद अहमद, तबरानी, तरगीब तरहीब लिल मुनज़िरी, ज़ल्द १, सज़ा १४ॢ)

पज़ाहत : ँस हदीष से साइ पाज़ेह हुपा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लम के पीछे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जुलंड आपाज़ से आमीन कहते थे ँस लिअे कि अगर सुनने में न आता तो यहूदी कयुं हसद करते?

तबरानी की अेक हदीष में हे कि इर्ज़ नमाज़ों में ँमाम के पीछे मुसलमानों के ‘आमीन’ कहने पर वह हसद करते हैं नीज़ यह ली मअलूम हुपा कि जुलंड आपाज़ से आमीन कहने पर हसद नहीं करना याहिअे कयुंकि यह यहूदीयों की आदत हे ँस जारे में आगे दूसरी अहादीष ली ँन्शाअल्लाह आअेगी.

हदीथ नंबर : ११ एब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया यहूदीयों को जतना तुम्हारे 'आमीन' कहने पर हसट हे एतना दूसरी किसी भी चीज़ पर नहीं पस, तुम (क्युंकि यह हसट करते हैं एस लिअे) ज़यादा 'आमीन' कहा करो.

पज़ाहत : यह रिवायत भी तन्बीह कर रही हे कि 'आमीन' पर नाराज़ नहीं होना चाहिअे जल्कि जे लोग मुजालिस्त या मलामत की पज़ह से जुलंद आवाज़ से 'आमीन' नहीं कहते तो ऐसे में मज़ीद कोशिश से 'आमीन' कहकर सुन्नत को ठिंटा करना चाहिअे.

हदीथ नंबर : १२ पाएल बिन हज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ज़स पकत 'पलज़ ज़ाल्लीन' कहते थे तो जुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहते थे.

(हवाला : अबू दावूद ज़ल्द १, सज़ा-१३५, दारमी सज़ा-१४७)

हदीथ नंबर : १३ समुरह बिन ज़ुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि ज़स पकत एमाम 'पलज़ ज़ाल्लीन' कहे तो 'आमीन' कहे अल्लाह तबारक व तआला तुम से मुहब्बत करेगा. (हवाला : रपाहु तबरानी इ़िल कबीर, तरगीब तरहीब लिल मुनज़िरी ज़ल्द १, सज़ा-१५०)

हदीथ नंबर : १४ एब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब 'पलज़ ज़ाल्लीन' कहते थे तो जुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहते थे. (हवाला : दारे कुतनी सज़ा-१२८)

हदीथ नंबर : १५ अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास जेहे हुअे थे, आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया अल्लाह तबारक व तआला ने मुजे तीन जसलते अता की हैं : (१) सड़ै बांधकर नमाज़ पणहना, (२) सलाम, जेकि अहले जन्नत की जसलत हे, (३) 'आमीन' कहना कि मुज से पहले किसी नबी को नहीं मिली एल्ला यह कि हाज़न अलयहिस्सलाम को दी गध जब मूसा अलयहिस्सलाम हुआ मांगते थे और हाज़न अलयहिस्सलाम 'आमीन' कहते थे. (हवाला : रपाहु एब्ने जुज़यमा..., तरगीब व तरहीब

लिल मुनठिरी ७८६ १, सझ-१४८)

पञ्चाहत : जे नेअमत पास धस उम्मत को अता हुध अइसोस कि उससे नइरत की जाती हे ओर दुआ के पीछे 'आमीन' कहने का मतलब हे की यह दुआ के ताबेअ हे ओर सुरह इतिहा ली अलीम दुआ हे ओर 'आमीन' उसके ली ताबेह हे उसका मतलब हे कि 'या अल्लाह ! यह दुआ कुबूल इरमा' धस लिअे 'आमीन' धस दुआ (सुरह इतिहा) के ताबेअ कहलाअेगी ओर ताबेअ का हुकम मतबूअ वाला होता हे लिहाऊा दुआ जहर से होगी तो 'आमीन' ली जहर से ओर दुआ आहिस्ता होगी तो 'आमीन' ली आहिस्ता.

हदीष नंबर : १५ अबू हुरैरह रठियल्लाहु अन्हु से रिपायत हे कि लोगो ने 'आमीन' छेण टी हे हांलाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब 'वलळ ञाल्लीन' कहते थे तो 'आमीन' कहते थे यहां तक कि पहली सइवाले सुनते थे इर उनकी आपाळ से मरुअुए गुंज जाती थी.

(हवाला : धब्नेमाज सझ - ५२)

पञ्चाहत : हदीष से मअलूम हुवा कि सहाबा किराम सुन्नत पर अमल के लिअे ओर टे ते थे कोध सुन्नत को तर्क करता था तो उसे तन्बीह करते थे ओर धससे यह ली मअलूम हुवा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पीछे मुकतटी ली बुलंद आपाळ से 'आमीन' कहते थे ओर मरुअुए गुंज जाती थी.

हदीष नंबर : १७ नाइअ से रिपायत हे कि धब्ने उमर रठियल्लाहु अन्हु जब सुरह इतिहा पूरी करते थे तो 'आमीन' कहते थे ओर कली ली तर्क नहीं करते थे ओर दूसरो को ('आमीन') कहने की तरगीब देते थे ओर में ने धस बारे में उनसे ललाध ही सुनी.

(हवाला : अब्दुर रळऊाक इतहुल बारी ७८६ २, सझ-२५३)

हदीष नंबर : १८ अबू मसबह अल भिकराध से रिपायत हे कि हम सहाबी अबू जुहैर अन-नमीरी के पास जाते थे ओर यह हमें अरछी अरछी अहादीष सुनाते थे इर हम में से कोध दुआ मांगता तो यह कहते दुआ को 'आमीन' से जत्म करना कयुंकि आमीन दुआ के लिअे धस तरह हे उस तरह किताब या

ખત કે લિએ મોહર. કહને લગે મેં તુમ્હેં હદીષ સુનાતા હું હમ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કે સાથ એક રાત નિકલે એક શખ્સ કે પાસ સે ગુઝરે વહ દુઆ માંગ રહા થા ઓર બહુત ઝયાદા આજુઝી કર રહા થા પસ, રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ખળે હોકર ઉસકી દુઆ સુનને લગે. ફિર ફરમાયા અગર ઉસને દુઆ કો મોહર લગાઇ તો (અપને લિએ જન્નત યા દુઆ કી કુબૂલિયત) વાજિબ કર દી તબ હમ મેં સે કિસીને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ સે પૂછા ! કિસ ચીઝ કે સાથ મોહર લગાએ ? આપને ફરમાયા ! ‘આમીન’ કે સાથ, અગર ‘આમીન’ કહી તો વાજિબ કર દી જાએગી. ફિર વહ સાઇલ ઉસ દુઆ માંગનેવાલે કે પાસ ગયા ઓર ઉસકો કહા દુઆ કો ‘આમીન’ કે સાથ ખત્મ કરના તુમ્હારે લિએ ખૂશખબરી હો. (હવાલા : અબૂ દાવૂદ જુલ્દ ૧, સફા-૧૩૫)

વઝાહત : ઇસ હદીષ સે મઅલુમ હુવા કિ દુઆ કે આખિર મેં આમીન કહના દુઆ કી કુબુલિયત કા બાઅિષ હોતા હે ઓર ઉસ સે જન્નત મિલેગી ઓર સુરહ ફાતિહા જેસી અઝીમ દુઆ દુસરી દુઆઓ સે ઝયાદહ હકદાર હે કિ ઉસ કે ઇખ્તિતામ પર આમીન કહકર ઉસ કો મોહર લગાઇ જાએ ઓર ચુંકિ આમીન દુઆ કે તાબેઅ હોતી હે લિહાઝા મતબુઅ (દુઆ) કે બિલજહર પળ્હને પર આમીન ભી બિલ જહર હોગી.

હદીષ નંબર : ૧૯ બિલાલ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ સે રિવાયત હે ઉન્હોને અર્ઝ કી કે યા રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ! આપ ‘આમીન’ કહને મેં મુજસે સબકત ન લે જાએ. (હવાલા : અબૂ દાવૂદ જુલ્દ-૧, સફા-૧૩૬, મુસ્નદ અહમદ જુલ્દ-૬, સફા-૧૨)

વઝાહત : ઇસ કે પહલે કી હદીષ નંબર-૬ ઓર ૭ મેં ગુઝરા કિ ‘આમીન’ કી ફઝીલત ઓર ષવાબ ઉસ વકત હે જબ વહ ફરિશ્તો કી ‘આમીન’ સે મિલે ઓર યહ મિલના ઉસ વકત નસીબ હોગા જબ ‘આમીન’ ઇમામ કે પીછે કહી જાએ લિહાઝા બિલાલ રઝિયલ્લાહુ અન્હુ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ કો કહ રહે હેં કિ આપ ‘આમીન’ કહને મેં જલ્દી ન કરે તાકિ મેં સૂરહ ફાતિહા પૂરી કરકે આપકે સાથ ‘આમીન’ કહું ઓર ‘આમીન’ કી ભલાઇ સે મહરૂમ ન રહું. ઇસ હદીષ સે ષાબિત હુવા કિ રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ

प सल्लम का 'आमीन' कहना जुलुंड आपाळ से होता था, परना बिलाल रळियल्लाहु अणु का ँस तरह कहना ने झयदा था.

हदीष नंबर : २० उम्मे हुसैन रळियल्लाहु अणु से रिपायत हे कि उण्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लम के पीछे नमाळ पण्ही पस, जब आपने 'पलळ ङाल्लीन' कहा तो 'आमीन' कही ओर उण्होंने (उम्मे हुसैन ने) ओरतो की सङ्ग में 'आमीन' सुनी.

(हवाला : मुस्नद ँस्हाक ँब्ने राहयैह पल अझराद लिद दारे कुतनी, निस्कुद रअयह सङ्ग-३७१, ७८६-१, अद-दिरायतु लि ँब्ने हजर सङ्ग-७८)

हदीष नंबर : २१ पाँल रळियल्लाहु अणु से रिपायत हे कि मेंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लम की ँकतिया में नमाळ पण्ही पस, जब आप सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमने 'पलळ ङाल्लीन' कहा तो 'आमीन' कही ओर हमने सुनी. (हवाला : ँब्ने माज्ज सङ्ग-५२)

हदीष नंबर : २२ अबू हुरैरह रळियल्लाहु अणु से रिपायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि प सल्लमने झरमाया कि जब ँमाम 'पलळ ङाल्लीन' कहे तो जो पीछे हो वह 'आमीन' कहे (उससे) आस्मान ओर ङमीनपाले झरिश्ते मुतपज्जे होते हैं ओर उस पकत ँंटे के गुळिश्ता गुनाह मुआङ्ग किअे जाते हैं ओर उसने 'आमीन' नहीं कही उसकी मिषाल उस आदमी की तरह हे जो किसी कोम के साथ जंग पर गया झर (माल के हुसूल के लिअे) कुदरआंदाळी की गँ ओर उसका हिस्सा न निकला ओर वह कह रहा हो मअलूम नहीं मेरा हिस्सा क्युं नहीं निकला तो जपाब यह मिलेगा कि तुने 'आमीन' नहीं कही. (हवाला : मुस्नद अभी यअला तरगीब तरहीब : ७८६-१, सङ्ग-१४८, तझसीर ँब्ने कषीर ७८६-१, सङ्ग-२२,)

पजाहत : ँस हदीष से ली 'आमीन' बिल जहर पाळैह होती हे क्युंकि अगर 'आमीन' जुलुंड आपाळ से नहीं होगी तो झरिश्ते किस तरह मुतपज्जे हगे ओर कोमपालो में से उसका हिस्सा नहीं निकलता उसको जपाब मिलता हे तुने 'आमीन' नहीं कही. ँससे ङाहिर होता हे 'आमीन' पही मोअतबर हे जो सुनने में आअे परना वह कह सकता हे कि मेने आहिस्ता कही थी.

हदीष नंबर : २३ एब्ने उमर रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि जब दूसरे लोग 'आमीन' कहते थे तो यह (एब्ने उमर) भी 'आमीन' कहते थे और उसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम की सुन्नत समजते थे. (हवाला : रवाहु बयहकी अयनी, शरह बुजारी जल्ल-३, सझ - १०८)

पञ्जाहत : एस हदीष से मअलूम हुवा कि 'आमीन' बिल जहर सुन्नते नबपी और मअमूले सहाबा था.

हदीष नंबर : २४ अबू हुदैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया 'आमीन' अल्लाह की तरफ से अपने मोमिन बंदो पर मोहर हे.

(हवाला : रवाहु एब्ने मरदुयह.. तइसीर एब्ने कपीर जल्ल-१, सझ-३१)

पञ्जाहत : एससे मअलूम हुवा कि 'आमीन' अल्लाह की तरफ से भास अता हे और मोमिनो का शिआर (निशानी) हे. इससे षाबित हुवा कि 'आमीन' बिल जहर कहना याहिअे कयुंकि निशान व शिआर वह हे जो ङाहिरन टेभने में आअे.

हदीष नंबर : २५ मआळ बिन जबल रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया यहूद हासिट कोम हे और जतना हसट तीन चीजो पर करते हैं एतना हसट किसी और चीज पर नहीं करते. (१) सलाम करना, (२) सई सीधी करना, (३) इर्ज नमाळ में एभाम के पीछे उन (मुकतदीयो) का 'आमीन' कहना. (हवाला : रवाहु तबरानी इिल अपसत... मजमअुळ ङपाएद, जल्ल-२, सझ-११३)

पञ्जाहत : सइ को टेभा जाता हे, सलाम को सुना जाता हे एसी तरह जब तक 'आमीन' सुनने में नहीं आअेगी तो उनको हसट कैसे होगा ?

हदीष नंबर : २६ बिलाल रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि 'आमीन' कहने में मुजसे जल्ली न कर (यअनी मेरी 'आमीन' के साथ 'आमीन' कहा कर)

(हवाला : मुस्तदरक हाकिम जल्ल-१, सझ-२१८, बयहकी जल्ल-२, सझ-५६)

पञ्जाहत : यह सब कुछ उस वकत हो सकता हे जब आप सल्लल्लाहु

अलयहि व सल्लमबी जुलंद आवाळ से 'आमीन' कहते हो परना बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु आपके साथ किस तरह आमीन कह सकते हे और बिलाल बी जुलंद आवाळ से 'आमीन' कहते थे परना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को कैसे मअलूम हुआ कि बिलाल उनसे 'आमीन' कहने में जल्दी करते हैं बल्कि धाबित हुआ आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पीछे सहाबा किराम जुलंद आवाळ से 'आमीन' कहते थे.

हदीथ नंबर : २७ अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया ज़सने 'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम' पण्ही इर सूरह इतिहा पण्ही इर 'आमीन' कही तो आस्मान का हर मुक़र्रब इरिशता उसके लिअे मग़ि़रत और बग्ग़िशश की दुआ मांगता हैं. (हवाला : अजरजहु दैलमी... तइसीर इतहुल कदीर लिश शपकानी, ज़ुल-१, सज़ा-१५)

पज़ाहत : यह तब होगा जब उसकी 'आमीन' सुनने में आयेगी.

हदीथ नंबर : २८ उम्मुल मुअमिनीन आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पास यहूद का तज़किरह हुआ आपने इरमाया यह हमसे ज़तना हसद तीन चीज़ों पर करते हैं किसी और चीज़ पर (घतना हसद) नहीं करते.

(१) अल्लाह तआला ने हमें जुम्आ अता किया और वह उस से महज़्म रहे.

(२) हमें किब्ला मिला वह इससे महज़्म रहे.

(३) एमाम के पीछे हमारा 'आमीन' कहना.

(हवाला : सहीह एब्ने जुज़यमा, मुस्नद अहमद ज़ुल-५, सज़ा-१३५, तरगीब तरहीब ज़ुल-१, सज़ा-१४८, एब्ने क़ीर : ज़ुल-१, सज़ा-३१)

हदीथ नंबर : २९ अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि नमाज़ में और दुआ के पक़्त मुज़े 'आमीन' दी गइ हे. यह ('आमीन') मुज़से पहले किसीको नहीं दी गइ अलावा मूसा अलयहिस्सलाम के वह दुआ मांगते और हाज़्न अलयहिस्सलाम 'आमीन' कहते थे. तुम अपनी दुआ 'आमीन' पर ज़त्म किया करो ताकि तुम्हारी दुआ कुबूल हो.

(हवाला : रवाहु एब्ने मरदूयह... एब्ने कषीर, ज़ल्द-१, सज़ा ३१)

पज़ाहत : सूरह झ़ातिहा तमाम दुआओ से ज़यादा बहेतरह दुआ हे लिहाज़ा उसको भी 'आमीन' पर ज़ल्म करना याहिअे.

हदीष नंबर : ३० अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया यहूद हसद करनेवाली कोम हे तुम से तीन बातो पर हसद करती हैं. (१) सलाम को इलाना, (२) सड़े सीधी करना, (३) आमीन कहना. (हवाला : रवाहु एब्ने अदी... इतहुल कदीर लिशशपकानी, ज़ल्द-१, सज़ा-१५)

हदीष नंबर : ३१ हबीब बिन मुस्लिमा इहरी रज़ियल्लाहु अन्हु से (जुनकी दुआ कुबूल होती थी) रिवायत हे... कहते हैं.... कि में ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम से सुना की कोय भी जमाअत एकड़ी होती हे उसमें से कुछ दुआ करत हैं ओर कुछ 'आमीन' कहते हैं तो अल्लाह तबारक व तआला उनकी दुआ कुबूल करता हे.

(हवाला : रवाहु हाकिम, तरगीब व तरहीब ज़ल्द-१, सज़ा-१५०)

पज़ाहत : नमाज़ जैसी दूसरी जमाअत कोय नहीं, सूरह झ़ातिहा जैसी दूसरी दुआ कोय नहीं.

हदीष नंबर : ३२ अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया अनकरीब मेरी उम्मत में ऐसे लोग (पैदा) होंगे जो लोगों को पीरों ओर मोल्पीयों के अकवाल की तरफ़ जुलाअेंगे और उन पर अमल करेंगे और मुसलमानो से एमाम के पीछे 'आमीन' कहने से एस तरह हसद करेंगे ज़ुस तरह एस पकत यहूद तुम से हसद करते हैं.

जबरदार यही हे एस उम्मत के यहूदी, जबरदार यही हे एस उम्मत के यहूदी, जबरदार यही हे एस उम्मत के यहूदी.

(हवाला : रवाहु एब्नुस्सकन व एब्नुल क्तान... जमअुल जवामेअ लिस्सुयुती व मस्लकु एन्साइ, सज़ा - २१,२२)

पज़ाहत : एस हदीष को टेज लेने के बअद मुसलमानों को 'आमीन' पर नाराज़ होने, उससे एस्तिहज़ाअ करने या 'आमीन' कहनेवालों से हसद या

दुश्मनी रफने से तौबा कर लेनी चाहिये जल्द सुन्नत के मुताबिक जहरी नमाज में जहर से 'आमीन' कहनी चाहिये इसी मतलब की रिवायत अताअ से भी मुरसलन मरफूअ 'कन्जुल उम्माल : ७८-१, सझा-८८ में मुसन्नइ अब्दुर रज्जाक के हवाले से मज्कूर हे.'

हदीथ नंबर : ३३ वाइल रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि में ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमको बुलंद आवाज से 'आमीन' कहते हुअे सुना. (हवाला : मुस्नद अहमद ७८-४, सझा-३१८)

हदीथ नंबर : ३४ अमीइल मुअमिनीन अली रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि 'आमीन' (दुआ के अअद) ऐसे हे जैसे किताब या षत के आभिर मे मोहर.

(हवाला : र्वाहु तबरानी, तइसीर इतहुल जयान : ७८-१, सझा-३४)

हदीथ नंबर : ३५ अबू ऊर गिझरी रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया कि इमाम इस लिये हे कि उसकी इकतिला ऊइर की जाये पस, जब वह 'वलज जाल्लीन' कहे तो तुम 'आमीन' कहा करो.

(हवाला : मुसन्नइ इब्ने अबी शयबा : ७८-१, सझा-५१८ कलमी)

पजाहत : इस हदीथ से मअलूम हुवा कि इमाम की सहीह मुताबिअत 'आमीन' से ही होगी.

हदीथ नंबर : ३६ अली रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब भी 'वलज जाल्लीन' कहते तो बुलंद आवाज से 'आमीन' कहते थे. (हवाला : र्वाहु इब्ने जरीर व इब्ने शाहीन, कन्जुल उम्माल : ७८-१, सझा-२१०)

हदीथ नंबर : ३७ वाइल रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि में ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के पीछे नमाज पण्ही आपने उस पकत नमाज शुइ की अल्लाहु अकबर कहा और दोनो हाथ कानो के बराबर उठाये इर सूरह इतिहा पण्ही जब उस से इरिग हुअे तो बुलंद आवाज से 'आमीन' कही. (हवाला : नसइ ७८-१, सझा-१४०)

हदीथ नंबर : ३८ अली रज्जियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमने इरमाया 'आमीन' कहा करो जब 'गयरिल मगजूभि अलयहिम पलळ ङाल्लीन' पण्ही जाये. (हवाला : रवाहु एब्ने शाहीन किस-सुण्ण, कन्जुल उम्माल, जल्ल-२, सङ्गा-८८)

हदीष नंबर : ३९ एब्ने शिहाब ङहरी से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लमसे रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब 'पलळ ङाल्लीन' कहते थे तो जुलंए आवाळ से 'आमीन' कहते थे. (हवाला : अजरिजहु अस सिराज, इतहुलबारी जल्ल-२, सङ्गा-२३३, एरशादिस सारी, जल्ल-२, सङ्गा-८५)

पञ्जाहत : एब्ने शिहाब ङोहरी ताबअी हे, एंस लिअे यह रिवायत मुरसल कहलाअेगी मगर अहनाइ के नङ्गीक मुरसल रिवायत मोअतबर होती हे और उल्लाअे हदीष के नङ्गीक जब दूसरी मुत्तसिल रिवायात मपजूए हो तो इर मुरसल रिवायत ली ताएड और शहादत के लिअे काड़ी होती हे.

हदीष नंबर : ४० अबू मयसरह से रिवायत हे कि जब जल्लएल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम को सूरह इतिहा पण्हाए इर आप सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम जब 'पलळ ङाल्लीन' पर पहुंचे तो जल्लएल ने कहा की आमीन कहो पस आपने 'आमीन' कही. (हवाला : रवाहु एब्ने अबी शयबा, पकीअ... तइसीर शपकानी : जल्ल-१, सङ्गा-१५)

पञ्जाहत : अबू मयसरह ताबअी हे एंस लीअे यह रिवायत ली मुरसल हे मगर चुंकि सहाबा किराम की बहुत सी रिवायत मपजूए हे लिहाळा यह रिवायत बतोरै ताएड के काड़ी हे.

अल जातिमा

अलहम्दुलिल्लाह... यह यालीस अहादीषे मुबारका नबी सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम के मुहिब्बो के लिअे निहायत ही मुसरत व हिदायत का बाअिष बनेगी.

एंसके बअद हम सहाबा किराम और ताबेएन के कुछ आषार पेश करते हैं.

आधारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और ताबेईने ईज़ाम रहमतुल्लाह

नंबर १ : ईब्ने जरीह से रिवायत हे कि में ने अताअ से पूछा कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह इतिहा के बअद 'आमीन' कहते थे ? उन्होंने कहा हां. और उनके पीछे जो मुकतदी होते थे वह भी ('आमीन') कहते थे यहां तक कि मस्जुद गुंज जाती थी और कहा (अताअ) ने कि अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जुद में दाखिल होते थे और ईमाम मुसल्ले पर जणा होता था, तो उसको पूकार कर कहते थे कि मुजसे पहले 'आमीन' न कहना. (यअनी आहिस्ता आहिस्ता पणहना ताकि में सूरह इतिहा पूरी करके तेरे साथ 'आमीन' कहुं)

(हवाला : मुसन्नइ अब्दुर रज़ाक इतहलु बारी : ७८६-२, सझ-२५२)

नंबर : २ ईब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि वह बुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहते थे ज्वाह ईमाम हो या मुकतदी.

(हवाला : बयहकी ७८६-२, सझ-५८)

नंबर : ३ अताअ बिन अबी रिबाह से रिवायत हे कि मेंने ईस मस्जुद यअनी बयतुल्लाह में दोसो (२००) सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को पाया हे कि उस वकत ईमाम 'वलज़ जाल्लीन' कहता तो वह बुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहते. (हवाला : ईब्ने हिब्बान ७८६-३, सझ-७१)

पज़ाहत : अताअ बिन अबी रिबाह ताबेईन में से ईमाम अबु हनीफ़ा के उस्ताद हैं उन्हीं के मुतअल्लिक ईमाम अबू हनीफ़ा इरमाते हैं कि में ने अताअ से बेहतर किसी और को नहीं देजा.

(अयनी शरह बुजारी ७८६-२, सझ-७५)

यह दोसो (२००) सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की अज़ीम जमाअत से कअबतुल्लाह (जो मुसलमानों का मरकज़े ईस्लामी हे) में बुलंद आवाज़ से 'आमीन' कहते हुअे सुनता हे. ईससे धाधित हुवा कि आम सहाबा किराम और ताबेईने ईज़ाम का यही अमल था. यह रिवायत बयहकी में ईस तरह हे जो नंबर-४ में हे.

नंबर : ४ अताअ बिन अबी रिबाह से रिवायत हे कि में ने दोसो (२००) सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को ईस मस्जुद (बयतुल्लाह) में पाया

जुस वकत एमामने 'वलळ ङाल्लिन' कहा तो में ने उनकी आमीन का शोर सुना. (हवाला : रवाहु बयहकी जल्ल-२, सझ-५८)

नंजर : ५ मुजहिद ताबए से रिवायत हे कहते हैं कि अक यहूदी मस्जुद के करीब से गुजरा 'आमीन' सुनकर कहने लगा ! अल्लाह की कसम जसने तुम्हें 'आमीन' सिजाए तुम हक पर हो.

(हवाला : मतालिबुल आलीया एब्ने हजर जल्ल-१, सझ-७१ कलमी)

वजहत : एस रिवायत से मखलूम हुवा कि मुसलमानों की मसाजुद में सहाबा व ताबेएन के दौर में 'आमीन' बिल जहर पर अमल था.

नंजर : ५ अकरमा ताबए कहते हैं कि में ने लोगों को पाया कि मस्जुद में एमाम के सुरह इतिहा जत्म करने के बअद उनकी 'आमीन' की गुंज होती थी. (हवाला : एब्ने अबीशयबा जल्ल-१, सझ-५१८ कलमी)

वजहत : 'अन्नास' लइळ से मुराद सहाबा किराम और ताबेएन सब मुराद हे जसका मतलब यह हुवा कि सलइ में यह अमल अहम था. एसके अलावा अबू हुरैरह, एब्ने उमर और बिलाल रजियल्लाहु अन्हुम का अमल भी उपर गुजरा.

हनई मजहब के उल्माअ के दलाएल

एतनी अहादीष और आधार को टेजकर हनई मजहब के बहुत सारे उल्माअ 'आमीन' बिल जहर के काएल हुअे हैं.

युनांचे अयनी ने शरह बुजारी जल्ल-१, सझ-१३ में, एब्नुल हुमामने इतहुल कदीर शरह हिदाया जल्ल-१, सझ-११७-१२१ में, एब्ने अमीर अल्हाज ने शरह मुनयतुल मुसल्ला में और तहापी ने शरह दुर्रे मुफ्तार में और मौल्वी अबुल आ'ला साहबने बहइल उलूम अरकाने अरबआ में, शोभ अब्दुल हक ने शरह मिशकात में 'आमीन' बिल जहर को सुन्नत माना हे.

और मौल्वी अब्दुल हय्य साहब लजनवी अत्तअलीक अल ममजद हाशीया मुअत्ता मुहम्मद' सझ-१०३ में लिखते हैं कि... 'एन्साइ यह हे कि बुलंद आपाळ से आमीन कहना बाअेअतिबार दलील के (आहिस्ता कहने से) ङयादह कपी और उला हे.' और सआयह शरह शरह मिरकात

૭૯-૨૪, સફા-૪૬ મેં લિખતે હે કિ

‘હમને સાલહા સાલ ચકકર લગાએ બને ગૌર ઓર તામિલ કે બઅદ બિલ આબિર ઇસ નતીજે તક પહુંચે કિ ‘આમીન’ બુલંદ આવાઝ સે કહના હી સહીહ હે.’

અલ્લામા સિરાજ અહમદ હિંદી હનફી શરહ તિરમિઝી : સફા-૨૭૨ શુરૂહે અરબઆ મેં લિખતે હે કિ... ‘આમીન’ બિલ જહર કી રિવાયાત ઝયાદા હે ઓર ઝયાદા સહીહ હે.’ (અબકાઝલ મિનન સફા-૧૮૧)

અલ્લામા રશીદ અહમદ ગંગોહી અપને ફતવા ૭૯-૧, સફા-૭૨ મેં ઓર સબીલુલ ઇરશાદ સફા-૧૨૧ મેં લિખતે હે કિ...

‘આમીન’ બિલ જહર કરનેવાલે કો મલામત નહીં કરની યાહિએ, કયુંકિ વહ હદીષ પર અમલ કર રહા હે.’

બુઝુર્ગ અવલીયા સે ષબૂત

ઇસી તરહ બહુત સારે બુઝુર્ગ અવલીયા ને ભી ‘આમીન’ બિલ જહર કો તરજીહ દી હે. જેસે સચ્ચદ અબ્દુલ કાદિર જુલાની રહમહુલ્લાહ જુનકો પીરાને પીર કહા જતા હે ગુન્યતુતાલિબીન, ૭૯-૧, સફા-૪ મેં ફરમાતે હે કિ...

‘જહરી નમાઝ મે જહર સે ‘આમીન’ કેહના નમાઝ કી શરફ હૈસીઅત ઓર નમુના હે.’

ઇમામ ગઝાલી રહમહુલ્લાહ અહ્યાઉલ ઉલૂમ ૭૯-૧, સફા-૯૮ હિંદી મેં શોખ અકબર ઇબ્ને અરબી કુતૂહાતે મકકીયહ ૭૯-૧, સફા-૫૬૪ મેં ઓર શાહ વલીઉલ્લાહ હુજ્જતુલ્લાહિલ બાલિગા મેં ‘આમીન’ બિલ જહર કે કાઇલ હે. શાહ ઇસ્માઇલ શહીદ તનવીરૂલ અયબેન સફા-૨૧ મેં ફરમાતે હે કિ ‘તહકીક ઓર રિવાયત મેં ગૌર કરને કે બઅદ યહી ઝાહિર હુવા હે કિ જહર સે ‘આમીન’ કહના આહિસ્તા ‘આમીન’ કહને સે ઊલા ઓર અફઝલ હે.’

હત્તા કિ ઇમામ શાફૂઈ તો ફરમાતે હે કિ અહલે ઇલ્મ હમેશા ‘આમીન’ બિલ જહર કે કાઇલ વ ફાઇલ રહે હે.

વ આબિરૂદ દઅ-વાના અનિલ હમ્દુ તિલ્લાહિ રબ્બિલ આલમીન.

(સાભાર : મકતબા અલ ફુરકાન, નડીઆદ)

हनई मऱहण के उल्माअ के दलाएल

एतनी अहादीष ओर आषार को ऐजकर हनई मऱहण के बहुत सारे उल्माअ ‘आमीन’ भिल जहर के काएल हुये हैं. युनांचे अयनी ने शरह जुपारी १८६-१, सझा-१३ में, एब्नुल हुमामने इतहुल कटीर शरह हिदाया १८६-१, सझा-११७-१२१ मे, एब्ने अमीर अल्हाज ने शरह मुनयतुल मुसल्ला में ओर तहापी ने शरह दुर्रे मुफ्तार में ओर मोल्वी अबुल आ’ला साहबने बहइल उलूम अरकाने अरबआ में, शेभ अब्दुल हक ने शरह मिशक़ात में ‘आमीन’ भिल जहर को सुन्नत माना हे.

ओर मोल्वी अब्दुल हय्य साहब लजनपी अतअलीक अल ममजद हाशीया मुअत्ता मुहम्मद’ सझा-१०३ में लिखते हैं कि... ‘एन्साइ यह हे कि जुलंद आपाऱ से आमीन कहना बाअेअतिबार दलील के (आहिस्ता कहने से) ऱयादह कवी ओर उला हे.’ ओर सआयह शरह शरह मिशक़ात १८६-२४, सझा-४५ में लिखते हे कि ‘हमने सालहा साल चककर लगाअे बणे गौर ओर तामिल के बअद भिल आभिर एस नतीजे तक पहुंचे कि ‘आमीन’ जुलंद आपाऱ से कहना ही सहीह हे.’

अल्लामा सिराज अहमद हिंदी हनई शरह तिरमिऱी : सझा-२७२ शुइहे अरबआ में लिखते हैं कि... ‘आमीन’ भिल जहर की रिवायात ऱयादा हैं ओर ऱयादा सहीह हे.’ (अबकाइल मिनन सझा-१८१) अल्लामा रशीद अहमद गंगोही अपने इतपा १८६-१, सझा-७२ में ओर सपीलुल एरशाद सझा-१२१ में लिखते हैं कि... ‘आमीन’ भिल जहर करनेवाले को मलामत नहीं करनी याहिअे, क्युंकि पह हदीष पर अमल कर रहा हे.’

जुऱ्गुर्ग अपलीया से षनूत

एसी तरह बहुत सारे जुऱ्गुर्ग अपलीया ने ली ‘आमीन’ भिल जहर को तरऱह दी हे. जैसे सय्यद अब्दुल कादिर जलानी रहमहुल्लाह उनको पीराने पीर कहा जाता हे गुन्यतुत्तालिबीन, १८६-१, सझा-४ में इरमाते हैं कि... ‘जहरी नमाऱ मे जहर से ‘आमीन’ केहना नमाऱ की शरघ हैसीअत ओर नमुना हे.’

एमाम गऱाली रहमहुल्लाह अहयाउल उलूम १८६-१, सझा-६८ हिंदी में शेभ अकबर एब्ने अरबी कुत्हाते मककीयह १८६-१, सझा-५५४ में ओर शाह पलीउल्लाह हुजजुल्लाहिल बालिगा में ‘आमीन’ भिल जहर के काएल हैं. शाह एस्माएल शहीद तनवीइल अयनेन सझा-२१ में इरमाते हैं कि ‘तहकीक ओर रिवायत में गौर करने के बअद यही ऱाहिर हुवा हे कि जहर से ‘आमीन’ कहना आहिस्ता ‘आमीन’ कहने से उला ओर अइऱल हे.’

हत्ता कि एमाम शाइइ तो इरमाते हे कि अहले एल्म हमेशा ‘आमीन’ भिल जहर के काएल प इाएल रहे हैं.

प आभिइद दअ-वाना अनिल हम्दु सिल्लाहि रब्बिल आलमीन.